इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में संग्रहीत टेराकोटा कला का कलात्मक अध्ययन (संदर्भ - भोपाल, मध्य प्रदेश)

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा से चित्रकला विषय में पी-एच॰डी॰ की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ॰ विजय कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
डाइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग, कला संकाय

शोधार्थी

आदेश कुमार पाण्डेय

डाइंग एण्ड पेन्टिंग विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा -282005

2022

विषय-प्रवेश

- शोध संकल्पना **1-2**
- सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन **2**
- परिकल्पना **3**
- उद्देश्य **3**
- चर **4**
- कार्य प्रणाली **4**
    - अनुसंधान अभिकल्प
- प्रदत्त संकलन **4**
    - प्राथमिक स्त्रोत
    - द्वितीयक स्त्रोत
- प्रतिदर्श आकार **4**
- सीमाएँ
- निष्कर्ष **4**
- आधुनिक युग में प्रासंगिकता **5**

शोध संकल्पना

प्राचीन काल से ही मनुष्य ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए माध्यमों का सृजन किया है। मनुष्य ने कभी पत्थरों पर अपने आस-पास के वातावरण को उकेरा, तो कभी गेरूआ एवं कालिख से सीधा चित्रों के माध्यम से अपने विचार प्रकट करने की कोशिश की। मनुष्य का स्वभाव हमेशा से ही विकासशील रहा है। मनुष्य के विकास के साथ ही उसकी प्रतिभाओं एवं कौशल को नए रूप मिलते गए पाषाण काल में मनुष्य ने शैल चित्र बनाने से आरंभ करते हुए पत्थरों से अपने उपयोग की वस्तुएँ बनाना शुरू किया इसके साथ ही पुरापाषाण काल में ही मनुष्य ने पत्थरों से आग जलाना सीख लिया था, जो मनुष्य के जीवन को सुगम बनाने में सार्थक सिध्द हुआ। नवपाषाण काल में पहिए का आविष्कार हुआ जिसका उपयोग प्रारम्भ में वस्तुओं को ढोये जाने तक सीमित था, परंन्तु मेसोपोटामिया में पाए गए संसार के सबसे पुराने पहिए के साक्ष्य जो लगभग 3500 ईसा पूर्व के हैं। इसका उपयोग मिट्टी के बर्तन बनाने में किया जाता था।

टेराकोटा का इतिहास अति प्राचीन है, मिट्टी के बर्तन को मनुष्य ने किस समय से आग में पकाना आरंम्भ किया यह सुनिश्चित करना दुर्लभ है, जर्मनी, बेल्जियम एवं इंग्लैंड की खुदाई में मिले हिमनदी अवधि के मिट्टी के पक्के हुए बर्तन 1500 ईसा पूर्व से ही बनते आ रहे हैं। इसके साथ ही नील नदी घाटी खुदाई के पक्की मिट्टी के बर्तन 13000 वर्ष पुराने हैं। मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की खुदाई में घरेलू उपयोग के पक्की मिट्टी के बर्तन जिन पर आलेखन एवं नक्काशी के साथ ही ज्यामितीय अनुरूप का समावेश है। इनका समय 3000 ईसा पूर्व का माना गया है। यहाँ कुछ अवशेष विश्व के प्राचीनतम् अवशेष माने गये है, जो मेसोपोटामिया से भी प्राचीन है। हमारे देश में टेराकोटा कला को प्राचीन काल से ही एक उपयोगी कला के रूप में माना गया है। आज भी देश में अनेक प्रांत एवं उनमें रहने वाले कुछ समुदाय अपनी टेराकोटा कला के लिए प्रसिद्ध हैं। बौरी अनुसार 1000 डिग्री सेल्सियस से कम ताप पर पकाए गए लाल मिट्टी के संरंध्र एवं अकाचित बर्तन टेराकोटा है। आधुनिक युग में हमारे देश में टेराकोटा का उपयोग घरेलू उपयोग की वस्तुओं तक ही सीमित न रहकर , आभूषणों एवं भवनों की साज- सज्जा तथा इसके साथ ही मूर्ति शिल्प में टेराकोटा की एक अलग ही पहचान है। वर्तमान समय में हमारे

देश में टेराकोटा कला का उपयोग व्यवहारिक रूप से कम होता जा रहा है। इसके साथ ही अंतराष्ट्रीय स्तर पर इसके प्रचार-प्रसार से विदेशों में टेराकोटा की उपयोगी वस्तुओं की माँग बढ़ाए जाने की कोशिश निरंतर जारी है। वर्तमान में यह कला एक व्यवसायिक रूप ले रही है। परन्तु वर्तमान में प्लास्टिक के खिलौनों ने टेराकोटा से बने खिलौनों का स्थान ले लिया है। दैनिक उपयोग की वस्तुओं में से अधिकांशतः टेराकोटा के स्थान पर प्लास्टिक एवं फाइबर की बनी वस्तुओं का उपयोग हो रहा है जिसका ह्रास टेराकोटा कला की परंपरागत संस्कृति पर देखने को मिलता है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

किसी भी विषय पर शोध करने से पूर्व उस विषय पर पर्याप्त जानकारी प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है। यह जानकारी हमें प्राप्त होती है, उस विषय से सम्बंधित साहित्य के अध्ययन एवं अवलोकन से टेराकोटा कला पर लिखी गई अनेक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं एवं शोध पत्रों का अध्ययन करने के बाद मैंने अपने शोध विषय इन्दिर इसके बाद मैंने वसंत निर्गुणे की पुस्तक मध्य प्रदेश के मिट्टी शिल्प जो कि भोपाल मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद से प्रकाशित है, इस पुस्तक का अध्ययन किया इस पुस्तक में मध्य प्रदेश के कुम्हारों द्वारा बनाई जाने वाली टेराकोटा कला का संक्षेप में वर्णन दिया गया है। इस पुस्तक से भोपाल की टेराकोटा कला की जानकारी मिली।

डी॰सी॰ गांगुली की पुस्तक इंडियन टेराकोटा आर्ट में भारत के विभिन्न भागों में बनाई जाने वाली टेराकोटा कला के बारे में संक्षिप्त लेख दिया गया है। मैंने इस पुस्तक से भारत के विभिन्न भागों की टेराकोटा कला का ज्ञान अर्जित किया ।

मुस्ताक खान की पुस्तक में लेख चाक पर बनती परंपरागत आकृतियाँ पुस्तक में चाक पर बनाए जाने वाले विभिन्न तरह की टेराकोटा कला के बारे में तकनीकी एवं शैलीगत लेख दिया गया है।

वसंत निर्गुणे के द्वारा ही लिखी गई एक अन्य पुस्तक समष्टिः माटी की कला अनेक क्षेत्रों में उपयोग एवं इसकी स्थिति के बारे में संपूर्ण लेख है।

परिकल्पना

किसी भी विषय में शोध करने के लिए सबसे आवश्यक है कि शोधार्थी उस विषय में उपर्युक्त ज्ञान हासिल करे । शोधार्थी को जिस विषय में शोध की लालसा हो उस विषय के सभी क्षेत्रों से जानकारी एकत्रित करे एवं अवलोकन करे कि उसका शोध सही विषय के लिए है या नही, भोपाल के इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में भ्रमण करते हुए मैंने टेराकोटा कला का एक अनोखा संसार देखा जो विविध क्षेत्रों से लाई गई टेराकोटा कलाओं का भण्डार था। इसके अतिरिक्त संग्रहालय में निरन्तर टेराकोटा कला को बढ़ावा दिया जा रहा है। देश के अलग- अलग प्रान्तों से अलग-अलग समुदायों के लोगों से उनकी स्थानीय शैली में टेराकोटा कला का काम कराया जा रहा है एवं उसका उपर्युक्त संरक्षण हो रहा है।

संग्रहालय में विशाल पुस्तकालय है जहाँ पर संग्रहालय से सम्बंधित एवं अनेक अन्य विषयों पर लाखों पुस्तकें, पत्रों का संग्रह है। पुस्तकालय में कर्मचारियों से वार्तालाप करते हुए मैंने पाया कि टेराकोटा कला का इतना बड़ा संग्रह होते हुए भी संग्रहालय में इस विषय पर कोई शोध नहीं हुआ है।

उद्देश्य

किसी भी शोध को सकारात्मक दिशा प्रदान करने के लिए शोधकर्ता को आवश्यक है कि वह शोध के उद्देश्यों को निर्धारित कर ले।

मेरे शोधकार्य "इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में संग्रहीत टेराकोटा कला का कलात्मक अध्ययन [संदर्भ - भोपाल, मध्य प्रदेश] का मुख्य उद्देश्य संग्रहालय में संग्रहीत विभिन्न टेराकोटा कलाओं को आधुनिक भारत में उजागर करना है।

इसके साथ ही मैं संग्रहालय में टेराकोटा कला के संरक्षण एवं इसके अभाव पर संग्रहालय के प्रशासन का ध्यान आकर्षित करूँगा।

आधुनिक युग मे टेराकोटा कला का ललित एवं उपयोगी कला के क्षेत्र में क्या महत्व है इस विषय को उजागर करूँगा।

चरः-

छाया चित्र

वेबसाइट

समाचार पत्र- पत्रिकाएँ

संग्रहालय के कलाकारों से वार्तालाप

संग्रहालय का सर्वेक्षण

संग्रहालय के संरक्षकों से साक्षात्कार

कार्य प्रणाली

- अनुसंधान अभिकल्प - मेरे शोध अनुसंधान विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान होगा।
- प्रदत्त संकलन - प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत का अनुपालन करते हुए मैं अपने शोध विषय के पहलुओं का एकत्रीकरण करूँगा।
- प्राथमिक स्त्रोत - संग्रहालय का भ्रमण करते हुए विशेषज्ञों से साक्षात्कार, संग्रहालय में संग्रहीत टेराकोटा कला का अवलोकन, छायाचित्रों का सर्वेक्षण।
- द्वितीयक स्त्रोत- वेबसाइट, शोधत्रप-, पुस्तकें, क्षेत्रीय प्रकाशित अखबार, स्थानीय लोगों से विचारविमर्श।-

प्रतिदर्श आकार -शोध के अन्तर्गत 105 से 200 छायाचित्रों का चुनाव किया गया है।

सीमाएँ -

शोध कार्य की समय सीमा के अंतर्गत रहते हुए अपने शोध विषय को पूर्ण करने के लिए मैंने भोपाल के इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय की ही टेराकोटा कला के कलात्मक अध्ययन का विषय चुना है।

निष्कर्ष -

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में देश के अनेक प्रान्तों की भिन्न-भिन्न टेराकोटा कला का संग्रह एक ही स्थान पर देखने को मिल जाता है।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता -

प्राचीन काल से ही भारत की लोक कलाएँ अपनी सांस्कृतिक एवं परंपरागत प्रभावशीलता के लिए जानी जाती रही है। टेराकोटा कला विश्व की सबसे प्राचीन कलाओं में से एक है। पाषाण युग के बाद से ही मनुष्य ने पक्की मिट्टी के बने औजारों एवं दैनिक उपयोग की वस्तुओं को अपने जीवन में समाहित कर लिया था। भारत देश में अनेक हस्तकलाओं का भण्डारण है जिनमें से पकाई हुई मिट्टी की कला प्राचीन काल से ही मानव जीवन का अभिन्न अंग बनी हुई है। टेराकोटा कला वह कला है, जो दैनिक युग में इतनी उपयोगी है कि इसकी प्रासंगिकता वर्तमान में बहुत ही प्रबल है। वर्तमान समय में टेराकोटा कला ने संपूर्ण संसार में अपनी एक अलग ही पहचान बना रखी है। उपयोगी कला होने के साथ-साथ टेराकोटा कला ने विभिन्न क्षेत्रों में अलग रूप शैली में अपनी छाप छोड़ी हुई है।

विषय सूची

भूमिका - भारतीय टेराकोटा कला का सिंहावलोकन

अध्याय प्रथम - मध्य प्रदेश में स्थित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय का भौगोलिक परिचय

अध्याय द्वितीय - इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में संग्रहीत कलाकृतियों का अध्ययन

2-1 टेराकोटा

2-2 काष्ठ कला

2-3 चित्रकला

2-4 अन्य कलाएँ

अध्याय तृतीय - इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में संग्रहीत टेराकोटा कला का विश्लेषण

3-1 विषय वस्तु

3-2 शैलियाँ

3-3 तकनीक एवं माध्यम

3-4 ललित कला एवं उपयोगी कला

अध्याय चतुर्थ - इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में संग्रहीत टेराकोटा कला का संरक्षण एवं उपयोग

अध्याय पंचम - टेराकोटा कला का वर्तमान समय में महत्व एवं उपयोगिता

उपसंहार

परिशिष्ट -

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

bibliography

पत्र - पत्रिकायें

वेबसाइटस्

मानचित्र

चित्र फलक

अनुसन्धान अभिकल्प

भूमिका - भूमिका के अन्तर्गत टेराकोटा कला का इतिहास एवं टेराकोटा कला के महत्व का वर्णन करूँगा।

अध्याय प्रथम - इस अध्याय के अंतर्गत मध्यप्रदेश के भोपाल शहर में स्थित - इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय की भौगोलिक स्थिति का उल्लेख करूँगा।

अध्याय द्वितीय - इस अध्याय में संग्रहालय में संग्रहीत कलाओं जैसे टेराकोटा कला ,काष्ठ कला, चित्रकला एवं अन्य कलाओं का लेख प्रस्तुत किया जाएगा।

अध्याय तृतीय - इस अध्याय के अंतर्गत संग्रहालय में संग्रहीत संपूर्ण टेराकोटा कला का विस्तृत परिचय दिया जाएगा तथा विषय वस्तु तकनीक, माध्यम एवं शैली को प्रस्तुत किया जाएगा।

अध्याय चतुर्थ - इस अध्याय में संग्रहालय में टेराकोटा के संरक्षण पर प्रकाश डाला जाएगा एवं संग्रहालय में इसके उपयोग का वर्णन होगा ।

अध्याय पंचम - वर्तमान में टेराकोटा का महत्व और समाज में उसकी उपयोगिता का वर्णन किया जाएगा ।

उपसंहार - इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में टेराकोटा का विशाल संग्रह है। इस कला के विभिन्न पक्षों का लेख प्रस्तुत किया जाएगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- खान, मुस्ताक, (1983), मिट्टी से खेलने वाले सरगुजा के कलाकार ,नव भारत टाइम्स।
- गांगुली, डी॰ सी॰, (1959), इण्डियन टेराकोटा आर्ट ,रूपा एंड कंपनी, कलकत्ता
- चट्टोपाध्याय, कमलादेवी, (1996),ग्लोरी ऑफ इण्डियन हैंडीक्राफट, इण्डियन बुक कंपनी, नई दिल्ली।
- दुबे,श्यामाचरण, (1960), मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड ,नई दिल्ली ।
- परमार, श्याम, (1975),मध्यप्रदेश लोक संस्कृति, नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया
- मजीद, अब्दुल, (2012), वातिक कला, जयपुर राजस्थान , हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- महावर, निरंजन, (1989), छत्तीसगढ़ के मिट्टी शिल्प, मध्य प्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्।
- शांडिल्य, महेश चन्द्र, (1990), लेख-जिनका घर ही है कला संसार ,नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- श्रीवास्तव, बृज भूषण, (1996), प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एंव मूर्तिकला- द्वितीय संस्करण, विश्वविघालय प्रकाशन वाराणसी।

Bibliography

- Coomaraswmy, A.K.,1908, *The Aims of Indian art*, Essex house press.
- Dasgupta, charu Chandra,2001, *Bibliography of ancient indian Terracotta figurnes*, Kolkata Firma klm
- Gupta, S.C ,1980, *The terracottas: The Roots of India*,New delhi Publishers.
- Jain, jyotindra,2003, *Indian Terracottas*, Mumbai India, Book house.
- Majumdar, R.C.,1967, *Advance history of India,* st. Martin's press, New york.
- Mitter, Partha.,2001, *Indian Art*, Oxford University press
- Sankaliya, R.C. ,2012,*Prehistoric art of India*, Research India press.

Internet websites:-

- www.inextlive.com
- www.tripadvisor.in/LocationPhotoDirectLink-g319726-d2479152-i201001847
- Indira_Gandhi_Rashtriya_Manav_Sangrahalaya_National_Museum_of_Mankind-Bh.html
- https://www.alamy.com/terracotta-articles-manav-sangrahalaya-bhopal-madhya-
- pradesh-india-image64830230.html
- www.ancient.eu
- www.outlookindia.com
- www.freepressjournal.in/bhopal/bhopal-terracotta-ceramic-artefacts-on-sale

परिशिष्ट - चित्र फलक

चित्र संख्या - 1 चार सींग बाले वृषभ की टेराकोटा से बनी आकृति
(राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल)

चित्र संख्या-2 सुंदरवन की बनदुर्गा की टेराकोटा आकृति
(राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल)

चित्र संख्या -3 टेराकोटा मिट्टी से बने पौराणिक कथा चित्र
(राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल)

चित्र संख्या -4 आदिवासी समुदायों के द्वारा बनाये गए कुलदेवता के चित्र
(राष्ट्रीय मानव संग्रहालय भोपाल)